हंसती-हंसाती हैं जापान की फिल्में

जापान की संस्कृति में हास्य की गहरी जड़ें हैं। यहां एनिमेशन के जरिये हंसाती हुई बातें हर जगह नजर आती हैं। चाहे वह कोई विज्ञापन हो, किसी टेलिफोन कंपनी की टोन हो या फिर रेलवे स्टेशन। यहां पर दिखने वाले संदेश हमेशा गुदगुदाते हैं। ऐसा ही कुछ जापान की राजधानी टोक्यो में तीसवें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में नजर आने वाला है। गुरुवार की शाम से शुरू हुए इस फेस्टिवल में फुमिहिको सोरी की हास्य सीरिज दिखाई जाएगी।

मैंने सोचा था कि जापानी सिनेमा को दिखाने के लिए नई तकनीक और हॉलीवुड की तर्ज पर तैयारियां होंगी, लेकिन यहां तो आज की दुनिया को दिखाने की जापानी शैली ही अलग है, जिसमें हास्य का भरपूर इस्तेमाल है। इस फेस्टिवल के निदेशक ताकेओ हिसामत्सु ने कहा कि सिनेमा के लिए यदि हॉलीवुड जितना बजट हो, तो आप जापानी फिल्मों से हैरान हो जाएंगे। बीते एक दशक में जापानी सिनेमा ने जो ऊंचाइयां छुई हैं, वो इस फेस्टिवल में नजर आ रही हैं। दस साल पहले 2007 में हुए फेस्टिवल में बाज जैसा सेट बनाया था। **'द फुल मेटल अल्केमिस्ट'** में दो भाइयों के सफर की कहानी है, जो अपनी मां को खो देते हैं और मुश्किलों का सामना करते हैं। जब वे हार जाते हैं, तब फिर लगातार आती परेशानियों से लड़ने का फैसला करते हैं। उनके साथ दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं का सिलसिला चलता रहता है। **'द फुल मेटल अल्केमिस्ट'** मंगा हास्य के लिए जाना जाता है, जिसकी अपनी खासियत है (जिसमें खूनी हिंसक बातों को भी जगह मिली है, जो बच्चों सहित सभी में लोकप्रिय है)। इसे सबसे पहले 2001 में हीरोमु अराकावा ने दिखाया था। यह उन्हीं की कल्पना थी, जो बाद में चल पड़ी। इसकी सत्तर मिलियन कॉपियां दुनिया भर में बेची गईं और इस कहानी पर कई फिल्में और मोबाइल क्लिप भी बनीं, जो आज भी चल रही हैं। **'द टोक्यो'** सबसे नई सीरिज है।

टोक्यो से गौतमन भास्करन

एक इंटरव्यू में सोरी ने कहा था कि **'द फुल मेटल अल्केमिस्ट'** शोन मंगा हास्य का ही हिस्सा है, जिसका उद्देश्य लड़कों को ध्यान में रख कर कड़ियां पेश करना है। इसके छिपे हुए अंधेरे तत्वों से बहुत कुछ जुटाया है। सोरी 1997 में **'टाइटैनिक'** फिल्म बनाने वाले जेम्स कैमरून के साथ भी काम कर चुके हैं, जो उसी साल की उद्घाटन फिल्म थी। इसके बाद 2002 में उन्होंने **'पिंग-पोंग'** नाम से लाइव एक्शन वर्जन कॉमिक सीरिज लांच की थी। ताइयो मात्सुमोतो इसका हिस्सा थे। उन्होंने बॉक्सिंग पर भी कॉमिक सीरिज तैयार की है। **'द फुल मेटल अल्केमिस्ट'** के लिए सोरी ने बड़े पैमाने पर काम किया है और इसके लिए उन्होंने लंबा इंतजार भी किया है, क्योंकि जब उन्होंने इसकी कल्पना की थी, तब ऐसी टेक्नॉलॉजी नहीं थी, जैसा वो बनाना चाहते थे। अब वे ऐसा कर पाए हैं। तीन नवंबर को **'अल गोर स्टार्टर'**, **'एन इनकन्वीनिएंट सीक्वल : ट्रूथ टू पॉवर'** जैसी डॉक्यूमेंट्रियों के साथ यह फेस्टिवल खत्म होगा। अमेरिकी राजनेता और पर्यावरणवादी अल गोर, जो कि अमेरिका के राष्ट्रपति रह चुके हैं, वो भी यहां नजर आएंगे।

फेस्टिवल की शुरुआत से अंत के बीच टोक्यो एक कैनवास की तरह नजर आ रहा है, जहां फिल्में ही छाई हुई हैं। हिसामत्सु के शब्दों में यह फेस्टिवल विशाल, ताकतवर और शिक्षाप्रद बनने की ओर प्रेरित करने वाला है। यहां शामिल होने वाली फिल्मों, नाटकों और अलग-अलग श्रेणियों में होने वाली प्रस्तुतियों में हास्य, रोमांस और ड्रामा पेश होंगे, जिनमें कड़ी टक्कर होगी। अंतर्राष्ट्रीय स्तर के जजों की पैनल इन पर फैसले लेगी, वहीं लोकप्रिय अमेरिकी अभिनेता और डायरेक्टर टॉमी ली जॉन्स भी जज होंगे।

फेस्टिवल में कड़ी होड़ होगी और आठ विश्व प्रीमियर होंगे। **'झन्ना इसाबाएवास स्वेता'** ऐसी महिला के संघर्ष को दिखाती है, जो सुन नहीं सकती। **'ताकाहिसा झेझेस द लो लाइफ'** ऐसे कलाकारों की कहानी है, जो वयस्क फिल्मों के लिए काम करते हैं। ऐसे ही मार्गरेट वान ट्रोटा के बारे में भी एक कहानी है, जिसमें एक मॉडल के बारे में बात है, जो डिजाइनर बन जाती है और फिर अपने पति की पहली पत्नी के साथ मजबूरन रहना पड़ता है। असगर यूसेफाइनजाद की **'द होम'** भी ऐसी कहानी है, जिसमें एक महिला के सफर को दिखाया है, जो अपने घर लौटती है और उसके पिता की मौत हो चुकी है। गोविंदा वान मेलेस की **'गटलैंड'** रोमांचक थ्रिलर है, जिसमें अजूबे गांव को दिखाया है। डांग ईयू की **'द लुमिंग स्टार्म'** में भी ऐसी कहानी है, जिसमें एक फैक्टरी का गार्ड किसी जासूस की हत्या की जांच करता है और इसी सिलसिले में फिल्म कई रोमांचक मोड़ लेती है।